।। हीण लछ को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ हीण लछ को अंग लिखंते ||

|| कवित्त ||

हरि बे मुख सो शुद्र|| शुद्र मुख राम न बोले ||
घट तो दे सो शुद्र || शुद्र पूरो नहिं तोले || १ ||

जिस मनुष्य को शुद्र लक्षण है । रामजी से गर्भ मे राम नाम लेनेका करार किया और गर्भ से बाहर आनेके बाद रामनाम लिया नही वह एक नंबर का निच है । जो मुंह से राम नाम का उच्चारण नही करता है वह नीच है और जो कोई भी वस्तु तौलकर देते समय कम तौलता है वह नीच है जो तौलकर देने में पूरा तौलता नही है । वह मनुष्य नीच स्वभाव का है । || १ ||

परणी त्यागे शुद्र || शुद्र अवरा संग जावे ||
कड़वो बोले शुद्र || शुद्र कै दुख मनावे || २ ||

जो अपनी शादी की हुयी स्त्री को छोड़ता है वह नीच है और जो दूसरे पराई स्त्री से भोग करता है वह नीच है और मुंह से कटु वचन बोलता है वह नीच है और दुसरों को बोलकर, दूसरों को दु:खी कर देता है वह नीच है । || २ ||

बोहो अहंकारी शुद्र || शुद्र बोहो तामस होई ||
लछ खोटा सो शुद्र || शुद्र करणी नहिं कोई || ३ ||

और बहुत ही अहंकारी है वह नीच स्वभाव का मनुष्य नीच है । ये करनी कोई नीच नही है । जिसके लक्षण हलके है वही नीच है । जिसके लक्षण नीच है वह नीच ही है ।(अपने कुल का धंधा करनेवाला नीच नही है । नीच तो उसके अन्दर के स्वभाव और लक्षण के कारण होते है । अपना धंदा करनेसे नही होते । || ३ ||

बोहो तिसना सो शुद्र || शुद्र कूं चाय नचावे ||
झूठ साच मिल शुद्र || शुद्र बोहो बाध चलावे || ४ ||

जिसे बहुत ही तृष्णा है वह नीच है और जिस मनुष्य को चाहत नचाती है वह नीच है । झूठी बातों को सच बातों में मिलाता वह नीच है और बहुत वाद-विवाद करता है वह नीच है । ।४।

पिवे तमाखु शुद्र || शुद्र आफु बोहो खावे ||
सुरे पिये सो शुद्र || शुद्र अेमख मंगावे || ५ ||

और जो तमाखू(चीलम पीता)उसे नीच जाती का जानो व आफू(अफीम)खाता उसे नीच जाती का जाणो और दारू पीता वह नीच है और जो मांस खाते वे नीच है । || ५ ||

परणी छोड शुद्र || शुद्र मरजाद न माने ||
मिलीयां मिनषा जाय || शुद्र मुख कडवी ठाने || ६ ||

जो विवाहिता पत्नी को छोड़कर मायावी साधू हो जाता है वह नीच है और जो केवली

साधू संतों की या बड़े-बूढ़ो की मर्यादा नही रखता वह नीच है । मनुष्योको जाकर मिलता है और मुंह से कड्वे वचन बोलता है वह नीच है । ।। ६ ।।

राम न के मुख शुद्र ।। शुद्र झाड़ा बोहो सिखे ।।
पित्तर भूत अराध ।। शुद्र सो घर घर भीखे ।। ७ ।।

जो मुंह से राम नही कहता है वह नीच है और जो जादू टोना,मंत्र आदि सीखता है वह नीच है और पीतरों की तथा भूतों की आराधना करता है वह नीच है और घर-घर भीख मांगता वह नीच है । ।। ७ ।।

न्याव करण मे शुद्र ।। शुद्र पखो सो राखे ।।
साच झूठ कर देत ।। झूठ साचो कर राखे ।। ८ ।।

जो न्याय करते समय निरपक्ष न्याय न करते(एक का)पक्ष लेकर न्याय करता है वह नीच है और न्याय करने में झूठ को सच और सच को झूठ कर देता है वह नीच है । ।।८ ।।

हरि बेमुख सो शुद्र ।। शुद्र निन्दा बोहो ठाणे ।।
चुगली करे सो शुद्र ।। शुद्र सो आन बखाणे ।। ९ ।।

रामजी से जो भी विमुख है वे सभी नीच है और दूसरों की बहुत निन्दा करता है वह नीच है और जो दूसरे बली चढनेवाले राक्षसी देवताओं की बखान करता है वह नीच है । ।।९।।

समरथ सिरझण हार ।। ताय को मरम न पावे ।।
पांचा के बस शुद्र ।। शुद्र बिष निस दिन खावे ।। १० ।।

समर्थ शिरजनहार का याने पैदा करनेवाले का,मर्म(भेद)जिसे मिला नही वह नीच है और जो पांचो इंद्रियों के वश हुआ है वह नीच है और जो रात-दिन विषय रस खाता है वह नीच है । ।।१०।।

नहि भगत की लेश ।। शुद्र बातां बोहो धर हे ।।
घर मे आतम राम ।। ताय की शेव न कर हे ।। ११ ।।

जिसको केवली भक्ती का लवलेश नही है व केवली भक्ती छोड़कर वह दूसरी भक्तीयोकी बहुत ही बाते करता है वह नीच है और घर में ही याने अपने शरीर में आत्माराम है उनकी सेवा जो नही करता है वह नीच है ।।।११।।

ब्रम्ह न चीने शुद्र ।। शुद्र कर्म बोहोत बखाणे ।।
राचे राग विलास ।। नाँव हिरदे नहिं आणे ।। १२ ।।

सतस्वरुप ब्रम्ह नही खोजता वह नीच है । तथा जो त्रिगुणी माया के अनेक प्रकार के कर्मो का वर्णन करता है वह नीच है और जो राग रागिनीयाँ गाते है और सुनने के लिए रच मच रहे है तथा इंद्रियो के भोग विलास करते है और रामका नाम लेनेका हृदय में लाते नही है वे नीच है। ।।१२।।

धगो करे सो शुद्र ।। द्वितिया मन मांहि ।।

हरबिन बोले शुद्र ।। शुद्र बेटी को खाहि ।। १३ ।।

दूसरों से जो दगा करता है । वह नीच है और जिसके मन में दुसरे के प्रती विषम भाव वह नीच है जो हर(रामजी)शिवाय दूसरी बातें बोलता वह नीच है । जो अपनी लड़की का पैसा तथा उसके घर का अन्न खाता है वह नीच है।१३।।

हित कर बिरचे शुद्र ।। शुद्र फिर बेर चलावे ।।
लूण हरामी शुद्र ।। शुद्र मुख राम न गावे ।। १४ ।।

और दोस्ती करके उस दोस्ती से बदल जाता है और उसी दोस्त से पुन: दुश्मनी करता है वह नीच है और जो नमक हरामी याने जिस मालिक का नमक खाता,उस मालिक से नमक हरामी करता वह नीच है तथा जो मुंह से राम नाम गाता नही है वह नीच है । ।।१४।।

ढेड श्याम सुं बेर ।। शुद्र कुळ हाथ चलावे ।।
ढेड मुख नहि राम ।। शुद्र दावा दिन जावे ।। १५ ।।

अपने मालिक से दुश्मनी करता वह नौकर नीच है । या अपने कुल याने माता,पिता,पत्नी पर जो हाथ चलाता है वह नीच है और जिसके मुंह में राम नाम नही है वह नीच है और जिससे उससे तकरार करने मे,जिसका दिन व्यतीत होता है वह नीच है ।।। १५ ।।

ढेड गुरू सो होय ।। राम बिन आन बतावे ।।
सिष कूं हुँचे खाय ।। शुद्र गुरू भर्म दिढावे ।। १६ ।।

और जो गुरू बनकर राम नाम के शिवाय,दूसरे बली लेनेवाले अन्य देवों की भक्ती करना दिखाता है वह गुरू नीच है और जो अपने शिष्य को अपनी जाल में खींचकर कैवल्य भक्ती से निकालकर भ्रम में डाल देता है वह गुरू नीच है । ।। १६ ।।

साचो देवळ छोड़ ।। झूठ की सेव बतावे ।।
ढेड गुरू सुखराम ।। राम बिन भर्म दिढावे ।। १७ ।।

खरा याने सतस्वरुपी देव स्थान छोड़कर,खोटे याने बली देनेवाले देव स्थान बताता है वह नीच गुरू है । राम नाम के शिवाय दूसरे भ्रम पकड़नेको कहते है वे गुरू नीच है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १७ ।।

भाड खाय सो शुद्र ।। शुद्र सो सूंकाँ लेवे ।।
करे दलाली शुद्र ।। शुद्र सुख जीव न देवे ।। १८ ।।

और जो भाड़ खाता वह नीच है । भाड़ खानेवाला अती नीच है और जो रिश्वत लेता वह नीच है और दलाली करना,(लड़कीयों की दलाली करनेवाले कन्या दलाल और वेश्याओंके दलाल) ये दलाली करने वाले नीच है और अपने जीव को सुख नही देता पीठ पे लोहे के साखली सरीखे वस्तूसे मार मार कर दु:ख देता वह नीच है । ।। १८ ।।

मिली साट में शुद्र ।। शुद्र ले भिचकी राळे ।।

बन दून्टे सो शुद्र ।। शुद्र सो नगरी वाळे ।। १९ ।।

और जो सगाई मे जुटने मे अवरोध उत्पन्न करता । सगाई जुड़ने नही देता वह नीच है और वन को आग लगा देते है वे नीच है व घर को गाँव को जो आग लगा देता वह नीच है । ।१९।

सरवर फोडे पाळ ।। शुद्र सो देवळ ढावे ।।
बन काटे सो शुद्र ।। रूख सो खोद मंगावे ।। २० ।।

और जो सरोवर के बांध तोड़कर पानी निकाल देता और बांध तोड़ने कारण पुन: पानी नही रूकता ऐसा बांध तोड़ने वाले नीच है और देवालय को गिरा देता है । वह नीच है और वनों के पेड़ काटते है वे नीच है । और वृक्ष को खोदकर लाते है । (पेड़ अपने हाथ से न खोदकर,दूसरों से खुदवाते है । तो दूसरों को खोदने के लिए बुलाने वाला भी नीच है ।।।२०।।

झूठ साख भरे शुद्र ।। शुद्र सो हिंडण जावे ।।
मळ धारी रीझाय ।। शुद्र फूले कुमळावे ।। २१ ।।

और जो झूठी गवाही देता है वह नीच है और जो बे फालतू देश परदेश घूमने जाता है वह नीच है और मलधारी याने जो मैल याने मेद,मजा,मांस,मल,मुत्र,रूधीर,हाड़ इनसे भरे हुए मलधारी मनुष्य है उनको रिझाकर खुश करता है वह नीच है और मनुष्य जो मैल का मैला है । उसे खुश करके),मन मे अती प्रसन्न होता है और मनुष्य के नाराज हो जानेपर अती दु:खी होकर चेहरा उतार देता है वह नीच है । ।। २१ ।।

हर बिन बोले बेण ।। शुद्र सो आन मनावे ।।
राम नाम बिन साख ।। शुद्र आचार चलावे ।। २२ ।।

और हर(रामजी)के शिवाय दूसरे वचन याने ज्ञान बोलता है वह नीच है और अन्य देवताओं को मानता है याने आराधना पूजा करता है वह नीच है । राम नाम के बिना दूसरे साखी बोलकर आचरण चलाता है वह नीच है । ।।२२ ।।

जिवां कूं डेह काय ।। शुद्र यूं नर्क ले जावे ।।
आन धर्म सो शुद्र ।। ओर सिखे सीखावे ।। २३ ।।

जीवों को बहकाकर नर्कीय कर्मो में ले जाता है वह नीच है । अन्य धर्म(रामजी के शिवाय दूसरे धर्म),खुद स्वयं सीखता है और दूसरों को भी सिखाता है वह नीच है । ।।२३।।

अमर पद की बात ।। शुद्र के मना न भावे ।।
प्रम भक्त बिन मुक्त ।। शुद्र सो नरका जावे ।। २४ ।।

जिसके मन को अमरपद की बात भाँती नही है अच्छी नही लगती है वो नीच है । जो परमभक्ती कर कर मुक्ती को न जाते नर्क में जाता है वह नीच है । ।। २४ ।।

भगत बिना सब शुद्र ।। शुद्र जम द्वारे जावे ।।

किया कर्म मन शुद्र ।। धरम सो मार दिरावे ।। २५ ।।

भक्ती के बिना ये सभी यम के द्वारपर जाते है । मन के प्रमाण से नीच कार्य करते है । उन्हे धर्मराज मार देगा । ।। २५ ।।

भगत बिना नहिं मुगत ।। शुद्र सो जनम धरावे ।।
गर्भवास के मांय ।। शुद्र मळ मुत्तर खावे ।। २६ ।।

भक्ती के बिना मुक्ती नही होगी उन्हे पुन: जन्म लेना पड़ेगा ऐसा वापीस लेनेवाले नीच है। फिर से गर्भवास में आना पड़ा और वहाँ गर्भवासमे मल मुत्र खाना पडा वे नीच है । ।।२६ ।।

अरद मुख नव मास ।। शुद्र सो संकट पावे ।।
बिन भगती सो शुद्र ।। गर्भ मे ज्यां त्यां जावे ।। २७ ।।

गर्भ में नीचे मुंह और उपर पैर,इस प्रकार से संकट भोगना पड़ता है वो नीच है । भक्ती करने के अलावा सभी ही नीच है । भक्ती नही करने पर चौरासी लक्ष्य गर्भ में जाना पड़्ता ऐसा बार बार गर्भ में जानेवाला नीच है । ।। २७ ।।

गर्भवास नव मास ।। शुद्र सो बासा लीया ।।
मळ मुत्तर को आहार ।। शुद्र ले निस दिन कीया ।। २८ ।।

और जो गर्भवास में नव महिने रहे थे वे नीच है और गर्भ में मल–मूत्र का भोजन रात–दिन करते थे वे नीच है । ।। २८ ।।

पर नारी रत्त शुद्र ।। शुद्र वेस्या संग कर हे ।।
बोहो दिन धाडे काम ।। द्रव्य ले दण्ड मे भर हे ।। २९ ।।

जो दूसरी नारी से रती क्रिया करता है वह नीच है और जो वेश्या का साथ करता है वह नीच है । बहुत दिनों तक डाका डालने का काम करता रहता है वह नीच है तथा डाका डालकर दूसरों का धन लुटकर लाकर दंड भरता है वह नीच है । ।। २९ ।।

मात गर्भ नव मास ।। शुद्र सो संकट देखे ।।
दु:खी सासा होय जाय ।। मास नव अबखा लेखे ।। ३० ।।

जो माँ के गर्भमें नऊ महिने तक संकट भोगता है वह नीच है । उसे गर्भ मे नऊ महिने श्वांस आती नही है,इसलिए दुखी रहता है वह नीच है । ।। ३० ।।

साखी ।।

जनम समे सब शुद्र था ।। सब लोई संसार ।।
सुखराम दास करणी किया ।। ऊँच नीच बोहार ।। ३१ ।।

जन्म लेते समय संसार के सभी ही लोक नीच ही रहते है । जन्म लेने के बाद ऊंचे कर्म करने से ऊंचे होते है तथा नीच कर्म करने से नीच होते है । तो जन्म लेने के बाद करनी के व्यवहार के प्रमाण से ऊंच और नीच होता है परन्तु(जन्म लेते समय तो सभी ही नीच

रहते । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।। ३१ ।।

आ मै कही बिचार के ।। बुरो न मानो कोय ।।
मळ मुत्तर का संग सुं ।। सबे शुद्र ज्युँ होय ।। ३२ ।।

यह बात मैंने विचार करके कही है । इसमें कोई बुरा मत मानो । मल-मुत्र में रहने के कारण,सभी ही नीच ही जाती के जैसा होते । ।। ३२ ।।

राम भजे सो ब्रम्ह हे ।। करणी करे सो देव ।।
सुखराम न्याव सुं बोलियां ।। सुणो सकळ सब भेव ।। ३३ ।।

जो राम भजन करता है वह सतस्वरुप ब्रम्ह है और जो अच्छे कर्म करता है वह देव है । राम भजन करने वाला सतस्वरुप ब्रम्ह में मिलकर सतस्वरुप ब्रम्ह हो जाता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार कर न्याय से कहाँ है वह भेद सभी ही सुनो । ।।३३।।

राम बिना सब नीच हे ।। तिण मे फेर न सार ।।
ब्यास कहे सुखरामजी ।। हरि बिन सबे चमार ।। ३४ ।।

राम भजन के बिना सबी ही नीच है इसमें कोई शंका नही है । वेद व्यास ने कहा है कि हर(रामजी)के भक्ती के बिना सभी नीच है । ।। ३४ ।।

बाण खाण चारो सही ।। अेक आत्मा होय ।।
जन सुखिया जळ एक हे ।। फेर फार नहिं कोय ।। ३५ ।।

चार वाणी(परा,पश्यन्ती,मध्यमा और बैखरी),चार खाणी(अंडज,जारज,अंकुर और स्वेदज) , अंडज याने अंडे से उत्पन्न,जैसे पंछी,सर्प आदि और जारज याने जाले से उत्पन्न,जैसे मनुष्य, पशु,गाय,भैंस आदी,अंकुर याने जिसकी कोम निकलती है,जैसे वृक्ष आदी और उद्भीज स्वेदज जुवा वगैरे अपने आप पसीनेके मैल आदी से उत्पन्न हुये । इन सबमें एक ही आत्मा है । जैसे पानी कही का भी रहा,तो सभी पानी एक ही है । पानी में अन्तर नही है । उसी प्रकार सभी मे आत्मा सभी एक ही है । ।। ३५ ।।

बाँभी को चेलो तको ।। मकर चलावे जोय ।।
रीस बाद सुखराम के ।। बोहो निन्दा घट होय ।। ३६ ।।

जो व्यास मकर फैल-फितूर रचता है वह नीच गुरु का शिष्य होता है और जिसके घट में क्रोध और वाद विवाद करने वाला स्वभाव बहुत है वह नीच गुरु का शिष्य है और लोगों की बहुत ही निन्दा करता वह नीच गुरु का शिष्य है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३६ ।।

बाँभी को चेलो तको ।। ब्रम्ह बिचारे नाहिं ।।
में ते मुख सुखराम के ।। आपे चड बिष खाय ।। ३७ ।।

और जो ब्रम्ह का विचार नही करता और जिसके मुंह मै और तू ऐसा अहंकार है व विषय रस खाता है वह नीच गुरु का शिष्य है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है

। ।३७।

बाँभी को चेलो तको ।। तां घट भ्रम अनेक ।।
आछो खावण वास्ते ।। मकर चलावे देख ।। ३८ ।।

और जिसके घट में अनेक भ्रम है और जो अच्छा अच्छा खाने के लिए ढ्रोंग करता है वह नीच गुरु का चेला है ऐसा देखो । ।। ३८ ।।

बाँभी को चेलो तको ।। भजे न सिरझण हार ।।
कुल छाडे सुखराम के ।। बोहो पाखण्ड ले धार ।। ३९ ।।

और जो शिरजणहार(पैदा करने वाले का),रामजी का भजन करता नही है और कुल परिवार छोड़कर अनेक पाखण्ड धारण कर लेता है वह नीच गुरु का चेला है । ।। ३९ ।।

बाँभी को चेलो तको ।। भगत भेद बिन होय ।।
घर घर का सुखराम के ।। खावे टुकडा जोय ।। ४० ।।

और भेद के बिना भक्त बनकर बैठता है और भक्त बन के घर–घर का टुकड़ा माँगकर खाता फिरता है वह नीच गुरु का चेला है । ।। ४० ।।

बाँभी को चेलो तको ।। निरस बेण मुख माय ।।
समरथ साहिब छाड कर ।। मोगा पूजे जाय ।। ४१ ।।

जिसके मुंह से हलके वचन निकलते है और समर्थ साहब को छोड़कर मोगा(भूत,प्रेत,बीर, बीराटी,बैताल,थडगे,पीर आदिको पूजने जाता है वह नीच गुरु का चेला है । ।। ४१ ।।

बाँभी को चेलो तको ।। सिकळ विकळ नर होय ।।
ब्रम्ह भेद सुखराम के ।। तत्त नहिं चीने कोय ।। ४२ ।।

और जो मनुष्य सतस्वरुप ब्रम्ह का भेद पहचानता नही है । वह नीच गुरु का चेला है । जो मनुष्य कभी इस धर्म में जाता है तो कभी उस पंथ में आता है कभी वह उस देव की पूजा करता,तो कभी इस देव की,(म्हसोबा,बहीरोबा,ईसाई,मेस्काई आदि पूजता रहता है । वह शुद्र गुरु का चेला है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४२ ।।

दुर्वासा क्या सेवियो ।। तां का सिष अवतार ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। समझर करो बिचार ।। ४३ ।।

दुर्वासा ने किस प्रकार की भक्ती की तो उसका चेला कृष्ण हुआ यह सभी सुनो और समझकर विचार करो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४३ ।।

वशिष्ट मुनि क्या सेवियो ।। क्या सिंवऱ्यो को मोय ।।
ता के सिष सुखराम के ।। रामचंदसा होय ।। ४४ ।।

वशिष्ठ मुनी ने किस की सेवा की और किस प्रकार का स्मरण किया की उस वशिष्ठ का रामचन्द्र जैसा शिष्य हुआ यह मुझे विचार करके बताओ । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४४ ।।

सोरठा ||

हरि बिन शुद्र चमार || तुलछी चोडे के गया ||
सुखदेव कियो बिचार || सप्त धात को पींजरो || ४५ ||

हर(रामजी)के बिना सभी ही नीच है । ऐसा तुलसीदास ने प्रगट रूप में कहा और सुखदेव ने सभी जाती के मनुष्यों का देह पिंजरा रस,रूधीर,मांस,मेद,मज्जा,हड्डी एवं रेत इन सात धातू का है यह कहाँ । फिर कोई ऊंच और कोई नीच कैसे हुआ यह बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || ४५ ||

पांच पचीसु मांय || जन सुखदेव अेसे कहे ||
या बिन न्यारी देह बताय || चार बरण देह अेक हे || ४६ ||

सभी में याने ऊंच जाती में और नीच जाती में पांच इन्द्रियों के पांच विषय और पच्चीस प्रकृति रहते है । इनके शिवाय किसी की अलग देह है क्या तो मुझे वह दिखाओ चारों वर्णो की देह(शरीर)एक ही जैसा होता है अलग अलग नही होता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ||४६||

नख चख सकळ स्वरूप || रूइ बण्या कपास मे ||
ऊत्तम कूण सब सूत || धरणी ब्रम्हण्ड तेज जळ || ४७ ||

सभी के नाखून और आंखे एक जैसे है व स्वरूप भी एक जैसा ही है । नीच जाती के साढ़े तीन हाथ ऊंचे,तो ऊंची जाती के अठ्ठाइस हाथ ऊंचे,कोई दिखाई नही देता और रंग ब्राम्हण का सफेद,क्षत्रिय का लाल,वैश्य का पीला और शुद्र का काला ये कोई अलग अलग नही होता है । सभी वर्णो में चारो रंग के मनुष्य दिखाई पड़ते है । शुद्रों के दो आंखे होती तो ऊंची जाती के आंखे चार नही होती । ऐसे ही सींग और शेपुट भी ऊंच और नीच नही होते है । जैसे कपास में रूई और सरकी रहती है वैसे ही सभी एक है । अब इस एक कपास के सूत को उत्तम और मध्यम ऐसे कैसे समझे । इसी प्रकार आकाश,वायु,अग्नी,जल और पृथ्वी इन पाँचो सें बने हुए मनुष्यों को,उत्तम और मध्यम कैसा समजे । || ४७ ||

पवन सकळ मे होय || सुखराम कहे इण पाँच मे ||
मिधम कहे सो कोय || कुवो बेरी बावडी || ४८ ||

इस सभी पांचो तत्व के चारो वर्ण के अन्दर एक ही श्वास है तो अब किसे नीच दिखलाओगे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज ने पुछा । जैसे अलग अलग प्रकारके बावडीका पानी,तालाब का पानी और नदी का पानी प्यास बुजाने के लिये एक ही है उसे हलका,भारी कैसा कहोगे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । । || ४८ ||

सरवर नदियाँ होय || जन सुखिया जळ खाबडे ||
उत्तम किस्यो को होय || मेला कूं निरमळ करे || ४९ ||

तालाब का,नदीयों का और खाबडा याने डोंह का पानी,इन पानीयों में उत्तम कौनसा होता है वह मुझे बताओ?सभी पानी मैले को निर्मल करता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।४९।।

।। इति हीण लछ को अंग संपूरण ।।